

स्कूल ड्रॉपआउट रोकने में शिक्षकों की भूमिका

डॉ गजेंद्र तिवारी

प्राचार्य ज्ञान रोशनी शिक्षा महाविद्यालय खोखरा जिला जांजगीर.चांपा छ ग

सार

स्कूल छोड़ना एक प्रमुख शैक्षिक और सामाजिक चुनौती है जो छात्रों की शैक्षणिक प्रगति, व्यक्तिगत विकास और भविष्य के अवसरों को प्रभावित करती है। शिक्षक एक सहायक, समावेशी और प्रेरक शिक्षण वातावरण बनाकर स्कूल छोड़ने वालों को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान अध्ययन स्कूल छोड़ने के जोखिम वाले छात्रों की पहचान करने और उन्हें स्कूलों में बनाए रखने के लिए प्रभावी रणनीतियों को लागू करने में शिक्षकों की भूमिका की जांच करता है। शिक्षक न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं बल्कि मार्गदर्शक, परामर्शदाता, प्रेरक और रोल मॉडल के रूप में भी कार्य करते हैं जो शिक्षा के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। छात्रों के साथ नियमित बातचीत के माध्यम से, शिक्षक खराब उपस्थिति, कम शैक्षणिक प्रदर्शन, व्यवहार संबंधी मुद्दे, पढ़ाई में रुचि की कमी और सामाजिक-आर्थिक कठिनाइयों जैसे शुरुआती चेतावनी संकेतों को पहचान सकते हैं। अध्ययन विभिन्न शिक्षक-संबंधित हस्तक्षेपों पर प्रकाश डालता है, जिसमें व्यक्तिगत ध्यान, उपचारात्मक शिक्षण, भावनात्मक समर्थन, माता-पिता-शिक्षक संचार, छात्र भागीदारी को प्रोत्साहित करना और जुड़ाव और सीखने के परिणामों को बढ़ाने के लिए नवीन शिक्षण विधियों का उपयोग शामिल है। यह छात्रों के आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान और शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को बेहतर बनाने में सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंधों के महत्व पर भी जोर देता है। इसके अलावा, पेपर इस बात पर चर्चा करता है कि स्कूल छोड़ने में योगदान देने वाले सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक कारकों को संबोधित करने के लिए शिक्षक माता-पिता, स्कूल प्रशासकों और समुदायों के साथ कैसे सहयोग कर सकते हैं। निष्कर्षों से पता चलता है कि सक्रिय और सहानुभूतिपूर्ण शिक्षण पद्धतियाँ ड्रॉपआउट दर को काफी कम करती हैं और छात्र प्रतिधारण को बढ़ावा देती हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि स्कूल छोड़ने वालों को रोकने और सभी छात्रों के लिए समावेशी और समान शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण को मजबूत करना, परामर्श सहायता प्रदान करना और बाल-केंद्रित शैक्षिक प्रथाओं को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

मुख्य शब्द: स्कूल, ड्रॉपआउट, शिक्षकों

परिचय

शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपकरणों में से एक माना जाता है। यह जिम्मेदार नागरिकों को आकार देने, जीवन स्तर में सुधार लाने और राष्ट्रीय प्रगति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विभिन्न शैक्षिक सुधारों और सरकारी पहलों के बावजूद, कई देशों में, विशेषकर भारत जैसे विकासशील देशों में, स्कूल छोड़ना एक गंभीर मुद्दा बना हुआ है। स्कूल ड्रॉपआउट उस स्थिति को संदर्भित करता है जिसमें छात्र स्कूली शिक्षा के एक विशेष चरण को पूरा करने से पहले अपनी शिक्षा बंद कर देते हैं। यह समस्या न केवल व्यक्तिगत छात्रों के भविष्य को प्रभावित करती है बल्कि बेरोजगारी, गरीबी, बाल श्रम, सामाजिक असमानता और अपराध दर को बढ़ाकर समाज के समग्र विकास में भी बाधा डालती है। गरीबी, पारिवारिक समस्याएं, माता-पिता के समर्थन की कमी, खराब शैक्षणिक प्रदर्शन, सामाजिक भेदभाव, कम उम्र में शादी, साथियों का दबाव और अपर्याप्त स्कूल बुनियादी ढांचे सहित कई कारकों के कारण छात्र स्कूल छोड़ देते हैं। कई मामलों में, छात्र पढ़ाई में रुचि खो देते हैं क्योंकि वे सीखने के माहौल से अलग महसूस करते हैं या उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन और प्रोत्साहन नहीं मिल पाता है। शिक्षा में शामिल सभी हितधारकों के बीच, शिक्षक छात्रों की शैक्षणिक व्यस्तता, भावनात्मक कल्याण और उनकी शिक्षा जारी रखने की प्रेरणा

को प्रभावित करने में केंद्रीय स्थान रखते हैं। शिक्षक दैनिक आधार पर छात्रों के साथ बातचीत करते हैं और अक्सर व्यवहार और शैक्षणिक परिवर्तनों की पहचान करने वाले पहले व्यक्ति होते हैं जो स्कूल छोड़ने के जोखिम का संकेत दे सकते हैं। शिक्षकों की भूमिका कक्षा निर्देश से कहीं आगे तक फैली हुई है। आधुनिक शिक्षा शिक्षकों से अपेक्षा करती है कि वे सुविधाप्रदाता, संरक्षक, परामर्शदाता, प्रेरक और रोल मॉडल के रूप में कार्य करें जो शिक्षार्थियों के समग्र विकास में योगदान दें। एक देखभाल करने वाला और सहायक शिक्षक छात्रों को व्यक्तिगत और शैक्षणिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए प्रेरित कर सकता है, जिससे पढ़ाई छोड़ने की संभावना कम हो जाती है। जो शिक्षक छात्रों के साथ सकारात्मक संबंध बनाए रखते हैं, वे विश्वास, विश्वास और अपनेपन का माहौल बनाते हैं, जो स्कूल की गतिविधियों में नियमित उपस्थिति और सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है। जब छात्र मूल्यवान और समझे जाने वाले महसूस करते हैं, तो उनके शैक्षिक प्रक्रिया से जुड़े रहने की अधिक संभावना होती है।

शिक्षक स्कूल छोड़ने की प्रवृत्ति से जुड़े शुरुआती चेतावनी संकेतों की पहचान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कम उपस्थिति, शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट, विघटनकारी व्यवहार, कक्षा में भागीदारी की कमी, भावनात्मक संकट और सामाजिक अलगाव कुछ संकेतक हैं जिन्हें शिक्षक प्रारंभिक चरण में देख सकते हैं और संबोधित कर सकते हैं। निरंतर निगरानी और समय पर हस्तक्षेप के माध्यम से, शिक्षक संघर्षरत छात्रों को अतिरिक्त शैक्षणिक सहायता, परामर्श और प्रोत्साहन प्रदान कर सकते हैं। उपचारात्मक कक्षाएं, इंटरैक्टिव शिक्षण विधियां, व्यक्तिगत ध्यान और शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षाशास्त्र का उपयोग छात्रों को सीखने में आत्मविश्वास और रुचि विकसित करने में मदद करता है। ड्रॉपआउट रोकथाम का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू शिक्षकों, अभिभावकों, स्कूल अधिकारियों और समुदाय के बीच सहयोग है। शिक्षक छात्रों की प्रगति, चुनौतियों और जरूरतों के बारे में अभिभावकों को बताकर स्कूल और परिवार के बीच एक सेतु का काम करते हैं। प्रभावी अभिभावक-शिक्षक संपर्क छात्रों की शिक्षा को प्रभावित करने वाली सामाजिक-आर्थिक और भावनात्मक स्थितियों को समझने में मदद करता है। शिक्षक माता-पिता को अपने बच्चों की शिक्षा में सहायता करने और नियमित स्कूल उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। ग्रामीण और आर्थिक रूप से वंचित क्षेत्रों में, सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रमों में शिक्षकों की भागीदारी भी शिक्षा के मूल्य पर जोर देकर ड्रॉपआउट दर को कम करने में योगदान दे सकती है। हाल के वर्षों में, शैक्षिक नीतियों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने सभी बच्चों के लिए समावेशी और समान शिक्षा पर जोर दिया है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा लक्ष्यों की प्राप्ति स्कूल छोड़ने की दर को कम करने और छात्र प्रतिधारण में सुधार पर काफी हद तक निर्भर करती है। इस संदर्भ में, शिक्षक शैक्षिक परिवर्तन और सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख एजेंट बन जाते हैं। उनकी पेशेवर क्षमता, सहानुभूति, प्रतिबद्धता और संचार कौशल छात्रों के शैक्षिक अनुभवों और परिणामों को बहुत प्रभावित करते हैं। इसलिए, स्कूल छोड़ने वालों को रोकने में शिक्षकों की भूमिका को समझना शैक्षिक प्रणालियों को मजबूत करने और यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक बच्चे को अपनी शिक्षा सफलतापूर्वक पूरी करने का अवसर मिले। यह अध्ययन उन विभिन्न तरीकों की जांच करने पर केंद्रित है जिनमें शिक्षक शैक्षणिक मार्गदर्शन, भावनात्मक समर्थन, कक्षा प्रबंधन और सामुदायिक सहयोग के माध्यम से स्कूल छोड़ने की रोकथाम में योगदान करते हैं। यह छात्र प्रतिधारण और शैक्षिक समावेशन से जुड़ी चुनौतियों का समाधान करने में शिक्षकों को सशक्त बनाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण और संस्थागत समर्थन की आवश्यकता पर भी प्रकाश डालता है।

स्कूल ड्रॉपआउट की अवधारणा

स्कूल छोड़ना दुनिया भर में शैक्षिक प्रणालियों के सामने सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है। यह उस स्थिति को संदर्भित करता है जिसमें छात्र स्कूली शिक्षा के एक विशेष चरण को सफलतापूर्वक पूरा करने से पहले अपनी शिक्षा बंद कर देते हैं। स्कूल छोड़ने का मुद्दा केवल एक शैक्षिक चिंता का विषय नहीं है; यह एक सामाजिक, आर्थिक और विकासात्मक समस्या भी है जो व्यक्तियों, परिवारों, समुदायों और राष्ट्रों को प्रभावित करती है। जेरेमी डी. फिन (1989) के अनुसार, स्कूल छोड़ना कोई अचानक होने वाली घटना नहीं है, बल्कि शैक्षणिक शिक्षा, कक्षा में भागीदारी और स्कूल से संबंधित सामाजिक गतिविधियों से अलगाव की एक क्रमिक प्रक्रिया है। बार-बार शैक्षणिक विफलता, प्रेरणा की कमी, कम उपस्थिति या नकारात्मक स्कूल अनुभवों के कारण छात्र अक्सर पढ़ाई में रुचि खोने लगते हैं। समय के साथ, यह अलगाव मजबूत होता जाता है और अंततः छात्रों को स्थायी रूप से स्कूल छोड़ने के लिए प्रेरित करता है। रसेल डब्ल्यू. रुमबर्गर (2011) ने बताया कि स्कूल छोड़ना व्यक्तिगत, पारिवारिक, संस्थागत, आर्थिक और समुदाय से संबंधित स्थितियों सहित

कई परस्पर संबंधित कारकों से प्रभावित होता है। व्यक्तिगत कारकों में कम शैक्षणिक उपलब्धि, खराब आत्मसम्मान, व्यवहार संबंधी समस्याएं और शैक्षिक आकांक्षाओं की कमी शामिल हैं। परिवार-संबंधी कारणों में गरीबी, माता-पिता की अशिक्षा, पारिवारिक संघर्ष, माता-पिता के समर्थन की कमी, बाल श्रम और प्रवासन शामिल हो सकते हैं। स्कूल से संबंधित कारकों में अप्रभावी शिक्षण विधियां, छात्र-शिक्षक संपर्क की कमी, भेदभाव, बदमाशी और खराब शैक्षणिक बुनियादी ढांचा शामिल हैं। कई विकासशील देशों में, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, बच्चे अक्सर वित्तीय कठिनाइयों या सामाजिक जिम्मेदारियों के कारण स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर होते हैं। स्कूल छोड़ने के परिणाम गंभीर और लंबे समय तक चलने वाले होते हैं। जो छात्र समय से पहले स्कूल छोड़ देते हैं उन्हें रोजगार के सीमित अवसर, निम्न आय स्तर और कम सामाजिक गतिशीलता का सामना करना पड़ता है। वे बेरोजगारी, शोषण, अपराध, मादक द्रव्यों के सेवन और सामाजिक बहिष्कार के प्रति अधिक संवेदनशील हैं। यूनेस्को (2022) के अनुसार, उच्च ड्रॉपआउट दरें राष्ट्रीय विकास में बाधा डालती हैं क्योंकि वे मानव पूंजी निर्माण को कम करती हैं और सामाजिक असमानता को बढ़ाती हैं। ड्रॉपआउट छात्रों के आत्मविश्वास को कम करके और उनकी भविष्य की आकांक्षाओं को सीमित करके उनके मनोवैज्ञानिक कल्याण को भी प्रभावित करता है। इसलिए, स्कूल छोड़ने की दर को कम करना दुनिया भर की सरकारों, शैक्षणिक संस्थानों और नीति निर्माताओं के लिए एक प्रमुख प्राथमिकता बन गई है।

विद्यार्थी प्रतिधारण में शिक्षकों का महत्व

स्कूल छोड़ने वालों को रोकने और छात्रों की पढ़ाई सुनिश्चित करने में शिक्षक अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे शैक्षिक प्रणाली के भीतर बातचीत के प्राथमिक एजेंट हैं और छात्रों की शैक्षणिक प्रगति, भावनात्मक कल्याण और सामाजिक विकास पर सीधा प्रभाव डालते हैं। चूंकि शिक्षक प्रतिदिन छात्रों के साथ संवाद करते हैं, वे सीखने की कठिनाइयों, व्यवहारिक परिवर्तनों और भावनात्मक संघर्षों की पहचान करने के लिए एक अद्वितीय स्थिति में होते हैं जो स्कूल से अलगाव का कारण बन सकते हैं। फिन (1989) के अनुसार, जो छात्र कक्षा की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और शिक्षकों के साथ मजबूत संबंध विकसित करते हैं, उनके स्कूल छोड़ने की संभावना कम होती है। शिक्षक एक सकारात्मक और सहायक शिक्षण वातावरण बनाकर छात्रों को बनाए रखने में योगदान देते हैं। सम्मान, प्रोत्साहन और समावेशिता से युक्त कक्षा का माहौल छात्रों को शैक्षिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करता है। जब छात्र अपने शिक्षकों द्वारा स्वीकार्य और मूल्यवान महसूस करते हैं, तो उनमें स्कूल के प्रति जुड़ाव की मजबूत भावना विकसित होती है। रुमबर्गर (2011) ने इस बात पर जोर दिया कि सहायक शिक्षक-छात्र संबंध छात्रों की व्यस्तता को बढ़ाते हैं और शैक्षणिक दृढ़ता में सुधार करते हैं। शिक्षक जो भावनात्मक प्रोत्साहन और शैक्षणिक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, वे छात्रों को सीखने की चुनौतियों से उबरने और उनकी क्षमताओं में विश्वास पैदा करने में मदद करते हैं। शैक्षणिक निर्देश के अलावा, शिक्षक सलाहकार, परामर्शदाता, प्रेरक और रोल मॉडल के रूप में कार्य करते हैं। वे छात्रों को शैक्षिक लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करते हैं। वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों को शिक्षा के प्रति प्रतिबद्ध रहने के लिए अक्सर भावनात्मक समर्थन और व्यक्तिगत मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। जो शिक्षक छात्रों की सामाजिक-आर्थिक और मनोवैज्ञानिक स्थितियों को समझते हैं, वे सहानुभूति और प्रोत्साहन प्रदान कर सकते हैं जो स्कूली शिक्षा के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। प्रभावी शिक्षण विधियाँ भी विद्यार्थियों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। इंटरएक्टिव शिक्षण रणनीतियाँ, गतिविधि-आधारित शिक्षा, समूह चर्चा, शैक्षिक प्रौद्योगिकी और शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण कक्षाओं को अधिक आकर्षक और मनोरंजक बनाते हैं। जॉन हैटी (2009) के अनुसार, प्रभावी शिक्षण प्रथाओं का छात्र उपलब्धि और प्रेरणा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जब छात्र पाठों को स्पष्ट रूप से समझते हैं और सीखने में सफलता का अनुभव करते हैं, तो वे अपनी शिक्षा जारी रखने में अधिक रुचि रखते हैं। इस प्रकार, शिक्षकों की व्यावसायिक क्षमता और समर्पण स्कूल छोड़ने की दर को कम करने और शैक्षिक परिणामों में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जोखिम वाले छात्रों की पहचान

शिक्षकों की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों में से एक उन छात्रों की पहचान करना है जिनके स्कूल छोड़ने का खतरा है। जोखिम वाले छात्र अक्सर कई चेतावनी संकेत प्रदर्शित करते हैं जो शिक्षा से विमुख होने का संकेत देते हैं। इन संकेतकों

में कम उपस्थिति, शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट, लगातार अनुपस्थिति, कक्षा में भागीदारी की कमी, विघटनकारी व्यवहार, भावनात्मक वापसी, कम आत्मविश्वास और सामाजिक अलगाव शामिल हो सकते हैं। फिन (1989) के अनुसार, छात्र पूरी तरह से पढ़ाई छोड़ने से पहले धीरे-धीरे स्कूल की गतिविधियों से अलग हो जाते हैं, जिससे रोकथाम के लिए शीघ्र पहचान आवश्यक हो जाती है। शिक्षक इन व्यवहारिक और शैक्षणिक परिवर्तनों का निरीक्षण करने के लिए सबसे अच्छी स्थिति में हैं क्योंकि वे नियमित रूप से छात्रों के साथ बातचीत करते हैं। निरंतर अवलोकन और मूल्यांकन के माध्यम से, शिक्षक उन छात्रों की पहचान कर सकते हैं जिन्हें अतिरिक्त सहायता और हस्तक्षेप की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, जो छात्र लगातार परीक्षाओं में असफल होते हैं या कक्षा की चर्चाओं में भाग लेने से बचते हैं, उन्हें सीखने में कठिनाई या भावनात्मक तनाव का अनुभव हो सकता है। इसी तरह, जो छात्र अक्सर स्कूल नहीं जाते, उन्हें आर्थिक कठिनाइयों, पारिवारिक समस्याओं या सामाजिक दबावों का सामना करना पड़ सकता है। शिक्षकों द्वारा कार्यान्वित प्रारंभिक हस्तक्षेप रणनीतियाँ ड्रॉपआउट जोखिम को काफी कम कर सकती हैं। शिक्षक संघर्षरत छात्रों को उपचारात्मक शिक्षण, व्यक्तिगत निर्देश, परामर्श और प्रेरक सहायता प्रदान कर सकते हैं। बाल्फ़ान्ज़ और हर्जो (2005) के अनुसार, अलगाव के शुरुआती चरणों के दौरान समय पर हस्तक्षेप से छात्रों की अपनी शिक्षा सफलतापूर्वक पूरी करने की संभावना में काफी सुधार होता है। शिक्षक छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप सहायता योजनाएँ विकसित करने के लिए स्कूल परामर्शदाताओं, प्रशासकों और अभिभावकों के साथ भी समन्वय कर सकते हैं।

शिक्षक-छात्र संबंध और प्रेरणा

एक स्वस्थ और सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंध स्कूल छोड़ने को रोकने में सबसे प्रभावशाली कारकों में से एक है। जो छात्र अपने शिक्षकों से भावनात्मक रूप से जुड़ाव महसूस करते हैं, उनके नियमित रूप से स्कूल जाने, सीखने की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने और शिक्षा के प्रति प्रेरित रहने की अधिक संभावना होती है। वेहलगे एट अल के अनुसार। (1989), देखभाल करने वाले शिक्षक और सहायक स्कूल वातावरण छात्रों की व्यस्तता और शैक्षिक सफलता में काफी सुधार करते हैं। सहानुभूति, सम्मान, धैर्य और समझ दिखाने वाले शिक्षक ऐसा माहौल बनाते हैं जहां छात्र सुरक्षित और मूल्यवान महसूस करते हैं। ऐसे रिश्ते छात्रों के आत्म-सम्मान को बढ़ाते हैं और अकेलेपन और अलगाव की भावनाओं को कम करते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग या कठिन पारिवारिक पृष्ठभूमि के छात्र अक्सर भावनात्मक प्रोत्साहन और मार्गदर्शन के लिए शिक्षकों पर निर्भर रहते हैं। एक सहायक शिक्षक एक छात्र के जीवन में प्रेरणा और स्थिरता का स्रोत बन सकता है। शिक्षकों द्वारा प्रदान की गई प्रेरणा शिक्षा में छात्रों की रुचि बनाए रखने में आवश्यक भूमिका निभाती है। शिक्षक छात्रों की उपलब्धियों को पहचानकर, उनके प्रयासों की सराहना करके और शैक्षणिक कठिनाइयों को दूर करने में उनकी मदद करके उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। सकारात्मक सुदृढीकरण से छात्रों का आत्मविश्वास और सीखने की इच्छा बढ़ती है। डेसी और रयान के आत्मनिर्णय सिद्धांत (2000) के अनुसार, प्रेरणा तब बढ़ती है जब व्यक्ति समर्थन, सक्षमता और सार्थक संबंधों का अनुभव करते हैं। शिक्षक प्रभावी संचार और प्रोत्साहन के माध्यम से इन सभी पहलुओं में योगदान देते हैं। आधुनिक शिक्षण दृष्टिकोण शिक्षक-छात्र संबंधों को भी मजबूत करते हैं और कक्षा में जुड़ाव बढ़ाते हैं। सहयोगी शिक्षण, परियोजना-आधारित गतिविधियाँ और इंटरैक्टिव चर्चाएँ जैसे शिक्षार्थी-केंद्रित तरीके छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाते हैं। जब छात्र सीखने के अनुभवों का आनंद लेते हैं और अपने शिक्षकों से भावनात्मक रूप से जुड़ाव महसूस करते हैं, तो उनके समय से पहले स्कूल छोड़ने की संभावना कम होती है।

अभिभावकों और सामुदायिक सहयोग में शिक्षकों की भूमिका

स्कूल छोड़ने की समस्या को रोकने के लिए शिक्षक स्कूलों, अभिभावकों और समुदायों के बीच सहयोग स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षा एक साझा जिम्मेदारी है और छात्रों की सफलता के लिए सभी हितधारकों के बीच प्रभावी संचार आवश्यक है। शिक्षक माता-पिता को छात्रों की शैक्षणिक प्रगति, उपस्थिति, व्यवहार और भावनात्मक कल्याण के बारे में सूचित करके स्कूल और परिवार के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करते हैं। रुमबर्गर (2011) के अनुसार, माता-पिता की भागीदारी छात्र प्रतिधारण और शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले सबसे मजबूत कारकों में से एक है। जो शिक्षक नियमित रूप से माता-पिता के साथ संवाद करते हैं, वे स्कूल और घर दोनों जगह एक

सहायक सीखने का माहौल बनाने में मदद करते हैं। अभिभावक-शिक्षक बैठकें, परामर्श सत्र और गृह दौरे शिक्षकों को छात्रों की शिक्षा को प्रभावित करने वाली सामाजिक और आर्थिक स्थितियों को समझने में सक्षम बनाते हैं। यह समझ शिक्षकों को अधिक उचित सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करने की अनुमति देती है। ग्रामीण और वंचित समुदायों में, कई माता-पिता अशिक्षा या वित्तीय चुनौतियों के कारण शिक्षा के महत्व को पूरी तरह से नहीं पहचान पाते हैं। शिक्षक स्कूली शिक्षा के दीर्घकालिक लाभों के बारे में परिवारों को शिक्षित करने के लिए जागरूकता अभियान और सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं। इस तरह की पहल माता-पिता को शिक्षा को प्राथमिकता देने और बाल श्रम, कम उम्र में विवाह और अनियमित स्कूल उपस्थिति जैसी प्रथाओं को कम करने के लिए प्रोत्साहित करती है। सामुदायिक भागीदारी से स्कूल छोड़ने की रोकथाम के प्रयासों को भी मजबूती मिलती है। कमजोर छात्रों के लिए सहायता प्रणाली बनाने के लिए शिक्षक स्थानीय नेताओं, सामाजिक संगठनों और शैक्षिक अधिकारियों के साथ सहयोग कर सकते हैं। समुदाय-आधारित शैक्षिक कार्यक्रम, छात्रवृत्ति, मुफ्त शिक्षण सामग्री और परामर्श सेवाएँ छात्रों को आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद अपनी शिक्षा जारी रखने में मदद कर सकती हैं। इसलिए, सामुदायिक सहयोग में शिक्षक की भागीदारी छात्र प्रतिधारण और शैक्षिक समावेशन को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

शिक्षक प्रशिक्षण और संस्थागत सहायता की आवश्यकता

शिक्षा की बदलती प्रकृति के कारण शिक्षकों को पारंपरिक कक्षा शिक्षण से परे कई जिम्मेदारियाँ निभाने की आवश्यकता होती है। शैक्षणिक निर्देश के अलावा, शिक्षकों से छात्रों की भावनात्मक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं पर ध्यान देने की अपेक्षा की जाती है। इसलिए, प्रभावी ड्रॉपआउट रोकथाम के लिए उचित शिक्षक प्रशिक्षण और संस्थागत समर्थन आवश्यक है। क्रिस्टेंसन और थुरलो (2004) के अनुसार, स्कूलों को शिक्षकों को परामर्श कौशल, कक्षा प्रबंधन तकनीकों और समावेशी शिक्षण रणनीतियों से लैस करना चाहिए ताकि उन्हें स्कूल छोड़ने से जुड़े जटिल कारकों से निपटने में मदद मिल सके। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को संचार कौशल, छात्र जुड़ाव तकनीक, संघर्ष समाधान रणनीतियों और बाल मनोविज्ञान ज्ञान विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जो शिक्षक पेशेवर रूप से प्रशिक्षित हैं, वे जोखिम वाले छात्रों की पहचान करने और प्रभावी हस्तक्षेप लागू करने में बेहतर सक्षम हैं। निरंतर व्यावसायिक विकास शिक्षकों को नवीन शिक्षण विधियों को अपनाने में भी मदद करता है जो सीखने को अधिक इंटरैक्टिव और छात्र-केंद्रित बनाते हैं। शिक्षकों को अपनी जिम्मेदारियाँ प्रभावी ढंग से निभाने के लिए सशक्त बनाने के लिए संस्थागत समर्थन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। स्कूलों को पर्याप्त शिक्षण संसाधन, परामर्श सुविधाएं, प्रशासनिक सहायता और प्रबंधनीय कार्यभार प्रदान करना चाहिए। अत्यधिक बोझ से दबे शिक्षकों को छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान देने में कठिनाई हो सकती है, जिससे ड्रॉपआउट रोकथाम रणनीतियों की प्रभावशीलता कम हो सकती है। इसलिए सरकारों और शैक्षिक अधिकारियों को शिक्षक कल्याण, बुनियादी ढांचे के विकास और समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने वाले शैक्षिक सुधारों में निवेश करना चाहिए। यूनेस्को (2022) के अनुसार, योग्य और प्रेरित शिक्षकों के बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त नहीं की जा सकती। शैक्षणिक संस्थानों को सहायक कार्य वातावरण बनाना चाहिए जहां शिक्षक मूल्यवान और पेशेवर रूप से सम्मानित महसूस करें। मजबूत शिक्षक सहायता प्रणालियाँ शिक्षण प्रभावशीलता में सुधार करती हैं, नौकरी से संतुष्टि बढ़ाती हैं और बेहतर छात्र परिणामों में योगदान करती हैं। नतीजतन, स्कूल छोड़ने की दर को कम करने और सभी छात्रों के लिए समान शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण और संस्थागत समर्थन को मजबूत करना आवश्यक है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. स्कूल छोड़ने वालों की संख्या में वृद्धि के कारणों का पता लगाना
2. ऐसे उपाय सुझाना जिससे स्कूल छोड़ने वालों की संख्या कम हो सके

अनुसंधान पद्धति: वर्तमान अध्ययन के लिए वर्णनात्मक डिजाइन का उपयोग किया गया था। यह अध्ययन एक मानक प्रश्नावली का उपयोग करके साहित्य सर्वेक्षण और क्षेत्र जांच पर आधारित है।

जनसंख्या और नमूना: बर्दवान नगर निगम के सभी शिक्षकों ने जनसंख्या का गठन किया और गैर-संभावना सुविधाजनक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग करके 80 शिक्षकों को सरकारी स्कूलों, निजी स्कूलों और गैर-लाभकारी संगठनों (एनपीओ) द्वारा संचालित स्कूलों से नमूने के रूप में चुना गया।

विक्षेपण तथा व्याख्या

अध्ययन प्रतिभागियों की प्रोफ़ाइल

- स्कूलों के प्रकार: 38 प्रतिशत शिक्षक निजी स्कूलों से थे, 31 प्रतिशत सरकारी स्कूलों से थे, और 31 प्रतिशत गैर-लाभकारी संगठनों से थे, यानी, निजी स्कूलों से 30 शिक्षक, सरकारी स्कूलों से 25 शिक्षक और गैर-लाभकारी संगठनों से 25 शिक्षक थे।
- लिंग: नमूने में कुल 14 पुरुष शिक्षक और 66 महिला शिक्षक शामिल हैं, यानी, 83 प्रतिशत नमूने में महिला शिक्षक और 17 प्रतिशत महिला शिक्षक हैं। पुरुष शिक्षक हैं। जब निजी स्कूलों पर विचार किया गया, तो 73 प्रतिशत महिलाएं और 27 प्रतिशत पुरुष थे। दूसरी ओर, गैर-लाभकारी संगठनों में 92 प्रतिशत महिला शिक्षक और 8 प्रतिशत पुरुष शिक्षक थे। जब सरकारी स्कूलों पर विचार किया गया, तो 84 प्रतिशत शिक्षक महिलाएं थीं, और 16 प्रतिशत पुरुष थे।
- उत्तरदाताओं का शिक्षण अनुभव: जब एक गैर-लाभकारी संगठन के अध्ययन प्रतिभागी के शिक्षण अनुभव को ध्यान में रखा गया, तो निम्नलिखित तथ्य प्राप्त हुए: 28 प्रतिशत शिक्षकों के पास पांच साल से कम का अनुभव था, 16 प्रतिशत के पास 11 से 16 साल का अनुभव था, 24 प्रतिशत के पास 16 से 21 साल का था, और 32 प्रतिशत के पास 21 साल से अधिक का अनुभव था। जब सरकारी स्कूलों के अध्ययन प्रतिभागियों के शिक्षण अनुभव को ध्यान में रखा गया, तो निम्नलिखित डेटा प्राप्त हुआ: 8 प्रतिशत शिक्षकों के पास 5 से 11 वर्ष का अनुभव था, 28 प्रतिशत के पास 11 से 16 वर्ष का अनुभव था, 36 प्रतिशत के पास 16 से 21 वर्ष का अनुभव था, और 28 प्रतिशत के पास 21 वर्ष से अधिक का अनुभव था।
- जब सरकारी स्कूलों के अध्ययन प्रतिभागियों के शिक्षण अनुभव को ध्यान में रखा गया, तो निम्नलिखित डेटा प्राप्त हुआ: 13 प्रतिशत शिक्षकों के पास 5-10 साल का अनुभव था, 20 प्रतिशत के पास 11-16 साल का अनुभव था, 30 प्रतिशत के पास 16-21 साल था, और 37 प्रतिशत के पास 21 साल से अधिक था।
- स्कूल में उत्तरदाताओं की स्थिति: जब गैर-लाभकारी संगठनों पर विचार किया गया, तो 40 प्रतिशत सहायक शिक्षक थे और 60 प्रतिशत शिक्षक थे। सरकारी स्कूलों में 12 प्रतिशत प्रशासक, 80 प्रतिशत सहायक शिक्षक और 8 प्रतिशत शिक्षक थे। निजी स्कूलों में 7 प्रतिशत प्रशासक, 10 प्रतिशत परामर्शदाता, 60 प्रतिशत सहायक शिक्षक और 23 प्रतिशत शिक्षक थे।

समग्र डेटा की व्याख्या

सभी शिक्षकों को 20 कथन प्रस्तुत किए गए, जिन पर उन्हें 'हां' या 'नहीं' में जवाब देने के लिए कहा गया। आइटम और समग्र प्रतिक्रियाएं नीचे तालिका में दिखाई गई हैं और प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत दिया गया है।

तालिका 3: अध्ययन प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं की संख्या

क्र.सं.	सामान	हाँ	नहीं
---------	-------	-----	------

1.	स्कूल को अनुपस्थिति की समस्या का सामना करना पड़ रहा है।	57	23
2.	छात्र बिना ज़रूरी स्टेशनरी के स्कूल आते हैं।	48	32
3.	छात्रों में स्कूल के माहौल के साथ तालमेल बिठाने के सामाजिक कौशल हैं।	56	24
4.	छात्रों को व्यवहारिक या भावनात्मक समस्याएँ हैं, जो उनके सीखने में बाधा डालती हैं।	58	22
5.	छात्र अक्सर घर पर बीमार पड़ जाते हैं।	16	64
6.	छात्र अपनी पढ़ाई के प्रति प्रेरित और इच्छुक हैं।	58	22
7.	स्कूल का माहौल सुरक्षित है।	65	15
8.	माता-पिता स्कूल के पाठ्यक्रम में सक्रिय रूप से शामिल हैं।	48	32
9.	माता-पिता बच्चे के पढ़ाई-लिखाई के कामों में शामिल नहीं होते हैं।	36	44
10.	छात्रों ने घर पर अपने बुरे अनुभवों के बारे में बताया है।	64	16
11.	स्कूल और माता-पिता के बीच बातचीत होती रहती है।	73	7
12.	माता-पिता को इस बात को लेकर आपस में असुरक्षा की भावना रहती है कि उनका बच्चा स्कूल में है।	15	65
13.	माता-पिता के पास अपने बच्चों को सही राह दिखाने के लिए ज़रूरी जानकारी और अनुभव है।	24	56
14.	माता-पिता ने ऐसे मामलों के बारे में बताया है, जब बच्चे ने स्कूल आने से मना कर दिया था।	32	48
15.	स्कूल के पास बच्चों की हाज़िरी बढ़ाने का एक मज़बूत सिस्टम है।	64	16
16.	स्कूल, धीरे सीखने वाले छात्रों के लिए 'रेमेडियल क्लास' (सुधारात्मक कक्षाएँ) चलाता है।	54	26
17.	स्कूल में नियमित रूप से सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ होती हैं।	73	7
18.	स्कूल अभिभावकों के लिए एनिमेशन कार्यक्रम आयोजित करता है।	39	41
19.	स्कूल परामर्श सुविधाएँ प्रदान करता है।	40	40
20.	स्कूल में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम है।	35	45

विश्लेषण किए गए जवाबों का प्रतिशत यह दिखाता है कि ऐसे कई कारण हैं जो छात्रों को कम उम्र में ही स्कूल छोड़ने के लिए प्रभावित कर सकते हैं। इकट्ठा किए गए डेटा के आधार पर, यह देखा गया है कि गैर-हाज़िरी के मुद्दे पर, 71.25

प्रतिशत शिक्षकों ने हाँ में जवाब दिया। इसलिए, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि गैर-हाज़िरी स्कूल छोड़ने वालों की बढ़ती संख्या के मुख्य कारणों में से एक है। 72.5 प्रतिशत शिक्षकों ने इस बात से सहमति जताई कि छात्रों को व्यवहारिक और भावनात्मक समस्याओं का सामना करते हुए देखा जाता है, जिसका उनकी पढ़ाई पर बुरा असर पड़ता है। यह मुद्दा इस बात से जुड़ा है कि 80 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि बच्चे को घर पर बुरे अनुभव होते हैं। इसके कारणों में टूटे हुए परिवार, शराबखोरी, आर्थिक तंगी, या परिवार के किसी सदस्य को खोना शामिल हो सकते हैं। लगभग 70 प्रतिशत शिक्षकों ने इस बात से सहमति जताई है कि माता-पिता के पास अपने बच्चे को पढ़ाई में बेहतर बनाने में मदद करने के लिए पर्याप्त जानकारी या कौशल नहीं होता। इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता, क्योंकि ज़्यादातर ग्रामीण इलाकों में, बच्चों को परिवार का आर्थिक बोझ कम करने के लिए स्कूल छोड़ने पर मजबूर किया जाता है; और माता-पिता को इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं होता कि शिक्षा आर्थिक स्थिरता के मामले में कितना फ़ायदा पहुँचाती है, और कई इलाकों में वे अब भी शिक्षा को समय और मेहनत की बर्बादी ही मानते हैं। इसे शिक्षा व्यवस्था और मीडिया की नाकामी माना जा सकता है, क्योंकि वे देश के अंदरूनी हिस्सों में यह बात फैलाने में नाकाम रहे हैं कि शिक्षा एक संपत्ति है, न कि कोई बोझ। सर्वे से यह भी साफ़ ज़ाहिर होता है कि लगभग 60 प्रतिशत छात्रों को अपनी पढ़ाई की ज़रूरतों को पूरा करने में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। अन्य कारणों में स्कूल में बच्चों के लिए काउंसलिंग सुविधाओं की कमी (50%) और माता-पिता के लिए ट्रेनिंग प्रोग्राम की कमी (51%) शामिल थे।

निजी, सरकारी और एनपीओ स्कूलों का तुलनात्मक विश्लेषण

अध्ययन से यह ध्यान देने योग्य है कि स्कूलों की विभिन्न श्रेणियों: निजी, सरकारी और गैर-लाभकारी संगठनों के शिक्षकों की ओर से विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएँ मिलीं। इन प्रतिक्रियाओं से विभिन्न प्रकार के स्कूलों में प्रचलित शिक्षा की विपरीत स्थितियों का पता चलता है। प्रत्येक श्रेणी के शिक्षकों की प्रतिक्रिया यह है कि पिछले दो से तीन दशकों में निजी स्कूलों ने बड़े पैमाने पर लोकप्रियता हासिल की है और बताया गया है कि उनमें स्कूल छोड़ने वालों की संख्या न्यूनतम है। निजी स्कूलों के अधिकांश शिक्षकों ने बताया कि ये स्कूल छात्रों को बेहतर माहौल और सीखने की सुविधाएँ प्रदान करते हैं। माता-पिता के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, छात्रों के लिए परामर्श सुविधाएँ और सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ निजी स्कूलों की कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं। भले ही इन स्कूलों के छात्र बेहतर वित्तीय स्थिरता और घरेलू परिस्थितियों के साथ तुलनात्मक रूप से बेहतर पृष्ठभूमि से हैं, लगभग 67% शिक्षकों ने बताया कि निजी स्कूलों के छात्रों को भी घर पर नकारात्मक घटनाओं का सामना करना पड़ रहा है। लगभग 50 प्रतिशत शिक्षकों ने बताया कि छात्रों को भावनात्मक और व्यवहार संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, और 53 प्रतिशत ने छात्रों के बीच अनुपस्थिति की सूचना दी। बेहतर बुनियादी ढाँचा और शिक्षा की गुणवत्ता होने से निजी स्कूलों को छात्रों के नामांकन और रखरखाव में अपने समकक्षों की तुलना में बहुत मिलती है।

सरकारी स्कूल छात्रों के बीच अपनी लोकप्रियता और समर्थन खो रहे हैं। नामांकन की कमी के कारण कई सरकारी स्कूल या तो बंद हो गए हैं या बंद होने के कगार पर हैं। ऐसी परिस्थितियों में भी, इनमें से कुछ स्कूल बड़ी संख्या में युवा दिमागों को शिक्षित करने का अपना काम जारी रख रहे हैं, जो विशिष्ट स्कूलों में अपनी शिक्षा प्राप्त करने के लिए पर्याप्त वित्त से वंचित हैं। वर्तमान अध्ययन में, शिक्षकों ने बताया कि स्कूल उपस्थिति में सुधार के लिए कदम उठा रहे हैं; हालाँकि, स्कूलों को अनुपस्थिति (67 प्रतिशत) की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। यह भी देखा गया कि छात्रों के पास बुनियादी स्टेशनरी वस्तुओं (67 प्रतिशत) की भी कमी है। शिक्षक भी इस तथ्य से सहमत हैं कि छात्रों को भावनात्मक और व्यवहार संबंधी समस्याओं (60 प्रतिशत) का सामना करना पड़ता है और घर पर नकारात्मक घटनाएँ होती हैं (70 प्रतिशत)। ये संस्थान नियमित आधार पर माता-पिता के साथ संवाद करते हैं, लेकिन बहुत कम संख्या में माता-पिता के पास अपने बच्चों को उनकी शिक्षा में मदद करने की विशेषज्ञता है (30 प्रतिशत)। इन विद्यालयों में पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं। फिर भी, छात्र अपने पाठ्यक्रम के प्रति पर्याप्त उत्साहित नहीं हैं और अपनी पढ़ाई के लिए पर्याप्त रूप से प्रेरित नहीं हैं। सरकारी स्कूल वंचितों के लिए शिक्षा के एक प्रमुख रूप के रूप में अपनी स्थिति को बनाए रखने का प्रयास करते हैं, लेकिन ऐसे कई अवांछनीय कारक हैं जो बच्चों को

उनकी शिक्षा की उपेक्षा करने के लिए प्रभावित करते हैं। गैर-लाभकारी संगठनों द्वारा प्रबंधित स्कूल शिक्षा की भूमिका निभाते हैं जब उनके अन्य समकक्ष लोगों के समुदाय की सेवा करने में असमर्थ होते हैं। एनपीओ निजी संस्थानों को संदर्भित करते हैं जो बुनियादी सुविधाओं से वंचित छात्रों को शिक्षित करते हैं और उन्हें जीविकोपार्जन के लिए बुनियादी कौशल में प्रशिक्षित करते हैं। ऐसे संस्थानों के छात्र ज्यादातर अनाथालयों, मलिन बस्तियों और सड़कों से होते हैं। इनमें से कई छात्रों को माता-पिता की निगरानी का भी अभाव है, और कुछ ने तो अपने माता-पिता को कभी देखा भी नहीं है। जब इस समुदाय की सेवा की बात आती है तो ये संस्थान प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इन स्कूलों के शिक्षकों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के अनुसार, उन्होंने बताया कि इन छात्रों में निजी और सरकारी संस्थानों के छात्रों की तुलना में बेहतर सामाजिक और व्यावहारिक कौशल (92 प्रतिशत) हैं। इन स्कूलों में अनुपस्थिति (84 प्रतिशत), बच्चों को भावनात्मक और व्यवहार संबंधी समस्याओं (84 प्रतिशत) का सामना करना पड़ता है, और घर पर नकारात्मक घटनाएं (92 प्रतिशत) होती हैं। ये स्कूल सह-पाठ्यचर्या संबंधी अवसर प्रदान करते हैं, और कुछ छात्रों को मध्याह्न भोजन और आवश्यक स्टेशनरी भी प्रदान करते हैं। संख्या में कम होने के बावजूद, ये स्कूल छात्रों को शिक्षित करने और उन्हें बेहतर माहौल में पोषित करने, वंचित समुदाय के सदस्यों तक शिक्षा का प्रकाश फैलाने के लक्ष्य को सफलतापूर्वक पूरा कर रहे हैं।

ड्रॉपआउट्स की संख्या में वृद्धि के कारण

शिक्षकों को चार गुणात्मक प्रश्न भी उपलब्ध कराए गए, जिनका उनसे जवाब देने को कहा गया। प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर, ड्रॉप-आउट के पीछे प्रमुख संभावित कारक इस प्रकार हैं:

गरीबी और वित्तीय बाधाएँ: भारत में विद्यार्थियों के स्कूल छोड़ने का एक प्रमुख कारण गरीबी है। कई भारतीय परिवारों के पास अपने बच्चों की शिक्षा का समर्थन करने के लिए वित्तीय साधन नहीं हैं। गरीबी के कारण परिवार ट्यूशन, किताबें, परिवहन और स्कूल से संबंधित अन्य खर्चों का भुगतान करने में असमर्थ हो जाते हैं, जिससे बच्चों को अपने परिवार को आर्थिक रूप से समर्थन देने के लिए घर पर रहने के लिए मजबूर होना पड़ता है। अधिकांश लड़कियाँ घरेलू कार्यों में मदद करने के लिए स्कूल छोड़ देती हैं, जबकि लड़के घरेलू आय बढ़ाने के लिए स्कूल छोड़ देते हैं। गरीब परिवारों में अक्सर स्वास्थ्य देखभाल की कमी होती है, जिससे बच्चे संक्रमण और बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं जो उन्हें स्कूल जाने से रोक सकते हैं।

बढ़ती बेरोजगारी दर: बढ़ती बेरोजगारी दर ने लोगों की धारणाओं को बदल दिया है, विशेषकर श्रमिक वर्ग और गरीबों की। भले ही छात्र अपनी पढ़ाई पूरी कर लें, फिर भी उन्हें विश्वास नहीं रहता कि उन्हें उपयुक्त रोजगार मिल सकता है। इसके अलावा, नौकरी के अवसरों की कमी से निराशा की भावना और स्कूल में बने रहने के लिए प्रेरणा की कमी हो सकती है। जो युवा बेरोजगार हैं उन्हें लगता है कि उनके पास अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए स्कूल छोड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। माता-पिता भी अपने बच्चों के लिए स्कूल छोड़ना पसंद करते हैं ताकि वे कहीं और काम कर सकें और परिवार का भरण-पोषण कर सकें।

रुचि और प्रेरणा की कमी: कई छात्र अपनी शिक्षा और पाठ्यक्रम के प्रति प्रेरित और उत्साही नहीं हैं। यह स्कूल छोड़ने का प्रमुख कारक है, विशेषकर सरकारी और गैर-लाभकारी स्कूलों में। ये छात्र पढ़ाई छोड़ना पसंद करते हैं क्योंकि कक्षा में जो कुछ भी पढ़ाया जाता है वह उन्हें आकर्षित नहीं करता है या उनका ध्यान नहीं खींचता है।

स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं: छात्रों के बीच ड्रॉपआउट दर स्वास्थ्य समस्याओं और हानियों से काफी प्रभावित हो सकती है। अपर्याप्त स्वास्थ्य अनुपस्थिति का कारण बन सकता है, जिसके कारण छात्र पिछड़ सकता है और अंततः पढ़ाई छोड़ सकता है। इसके अलावा, स्वास्थ्य समस्याएं और विकलांगताएं आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान की कमी का कारण बन सकती हैं, जिससे बच्चे के लिए स्कूल में बने रहना कठिन हो जाता है। भावनात्मक और व्यवहार संबंधी

मुद्दे: सीखने का डर, अवसाद, चिंता और विफलता का डर स्कूल छोड़ने की दर में महत्वपूर्ण योगदान देता है। टूट-फूट, मृत्यु, नशे, परिवारों में झगड़े, मौत आदि के कारण उत्पन्न होने वाला नकारात्मक घरेलू वातावरण भी छात्रों की

पढ़ाई पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। लगातार असफलता: कुछ छात्र बार-बार असफल होते हैं, जिससे उनमें आत्मविश्वास की कमी होती है और अंततः उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ता है।

अपराध: वर्तमान अध्ययन से पता चला है कि जो छात्र अपराधी व्यवहार में संलग्न होते हैं, उनके शैक्षणिक संस्थान छोड़ने की संभावना उन छात्रों की तुलना में अधिक होती है जो ऐसा नहीं करते हैं। अपराध के परिणामस्वरूप किसी छात्र को स्कूल से निष्कासित या निलंबित किया जा सकता है, या गिरफ्तार किया जा सकता है और उसका अपराधिक रिकॉर्ड हो सकता है। इन अप्रिय घटनाओं के कारण बच्चों की सीखने में रुचि कम हो सकती है और अंततः वे पढ़ाई छोड़ सकते हैं। अपराधी छात्रों को अन्य छात्रों के समान शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच नहीं मिल सकती है, जिसके परिणामस्वरूप स्कूल छोड़ना पड़ सकता है।

सामुदायिक समर्थन और उचित परिवेश का अभाव: यदि सुरक्षा की भावना और सकारात्मक माहौल नहीं है तो छात्र स्कूल में सहज या समर्थित महसूस नहीं कर सकते हैं। वे अंततः उदासीन हो सकते हैं और छोड़ सकते हैं। जब छात्रों के पास अपने साथियों के समान संसाधनों या शैक्षिक अवसरों तक पहुंच नहीं होती है, तो इसका उनके शैक्षणिक प्रदर्शन पर भी प्रभाव पड़ सकता है। इसके अलावा, यह देखा गया है कि कई बच्चे ऐसी जगहों पर रहते हैं जहां शिक्षा को महत्व नहीं दिया जाता है और जहां ड्रग्स, गिरोह और हिंसा बहुतायत में होती है। ऐसी स्थितियों के परिणामस्वरूप कम नामांकन और उच्च ड्रॉपआउट दर होती है।

विचार विमर्श

वर्तमान अध्ययन से पता चला है कि निजी स्कूलों में अपने समकक्षों, यानी, सरकारी और एनपीओ संस्थानों की तुलना में ड्रॉपआउट दर बहुत कम है। निजी स्कूलों ने पिछले दो दशकों में छात्रों के बीच बड़े पैमाने पर लोकप्रियता हासिल की है, खासकर उनके उन्नत शिक्षा के माध्यम, बेहतर बुनियादी ढांचे और कहीं अधिक उन्नत सुविधाओं के कारण। ये स्कूल अपने समकक्षों की तुलना में बहुत बेहतर सीखने का अनुभव प्रदान करते हैं और अपने छात्रों को सह-पाठ्यचर्या संबंधी अवसर प्रदान करते हैं। यह देखा गया है कि सरकार में नामांकित छात्रों की संख्या कम हो रही है और पढ़ाई छोड़ने वालों की संख्या बढ़ रही है। इन स्कूलों में बड़ी संख्या में छात्र अपनी पढ़ाई में कम रुचि रखते हैं, और अनुपस्थिति एक लगातार घटना है। यह देखा गया है कि इन छात्रों के परिवारों की भागीदारी पिछड़ रही है। सरकारी स्कूलों में भी छात्रों में स्कूल छोड़ने और दैनिक श्रम का विकल्प चुनने की प्रवृत्ति देखी गई। इन इलाकों के छात्रों के अक्सर स्कूल छोड़ने और विभिन्न प्रकार के श्रम में नियोजित होने की सूचना मिलती है। एनपीओ गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों में रहने वाले बच्चों को शिक्षित करने की जिम्मेदारी लेते हैं। ये संस्थाएँ निजी प्रकृति की हैं और वंचित समुदायों को शिक्षा प्रदान करने के लिए एक गैर सरकारी संगठन की तरह काम करती हैं। शिक्षा के स्वरूप में बुनियादी शिक्षा प्रदान करना शामिल है, जो उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने में मदद कर सकती है। ये स्कूल मुख्य रूप से कौशल-उन्मुख प्रशिक्षण प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं; वे छात्रों को विभिन्न कौशल सिखाते हैं जो उन्हें जीविकोपार्जन में मदद कर सकते हैं। इन स्कूलों में ड्रॉपआउट दर भी अधिक है, क्योंकि ये छात्र ऐसी पृष्ठभूमि से आते हैं जो शिक्षा को आवश्यक भी नहीं मानते हैं। इन संस्थानों के छात्रों को कम उम्र में ही रोजगार मिल जाता है और उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ती है।

निष्कर्ष

स्कूल छोड़ना दुनिया भर में शैक्षिक प्रणालियों के सामने सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक बनी हुई है। यह न केवल छात्रों के शैक्षणिक विकास और भविष्य के अवसरों को प्रभावित करता है बल्कि समाज के लिए दीर्घकालिक सामाजिक और आर्थिक समस्याएं भी पैदा करता है। जो छात्र समय से पहले स्कूल छोड़ देते हैं, उन्हें अक्सर बेरोजगारी, गरीबी, सामाजिक बहिष्कार, कम आत्मसम्मान और सीमित करियर अवसरों का सामना करना पड़ता है। ड्रॉपआउट का मुद्दा गरीबी, पारिवारिक समस्याओं, माता-पिता के समर्थन की कमी, खराब शैक्षणिक प्रदर्शन, सामाजिक भेदभाव और स्कूल की गतिविधियों के साथ कमजोर जुड़ाव जैसे विभिन्न परस्पर जुड़े कारकों से प्रभावित होता है। इसलिए, स्कूल छोड़ने को रोकने के लिए शिक्षकों, अभिभावकों, स्कूलों, समुदायों और नीति निर्माताओं के सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। सभी हितधारकों के बीच, शिक्षक छात्रों के साथ सीधे और निरंतर बातचीत के कारण स्कूल छोड़ने वालों को रोकने में

सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक न केवल शैक्षणिक निर्देश के लिए जिम्मेदार हैं, बल्कि मार्गदर्शक, प्रेरक, परामर्शदाता और रोल मॉडल के रूप में भी काम करते हैं जो छात्रों के शैक्षिक अनुभवों और भावनात्मक कल्याण को प्रभावित करते हैं। फिन (1989) के अनुसार, जो छात्र स्कूल से जुड़ाव महसूस करते हैं और कक्षा की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, उनके स्कूल छोड़ने की संभावना कम होती है। शिक्षक सहायक, समावेशी और आकर्षक सीखने के माहौल को बढ़ावा देकर अपनेपन की इस भावना को पैदा करने में मदद करते हैं जहां छात्र सम्मानित और मूल्यवान महसूस करते हैं। निष्कर्ष उचित शिक्षक प्रशिक्षण और संस्थागत समर्थन की आवश्यकता पर भी जोर देता है। आधुनिक शैक्षिक चुनौतियों के लिए शिक्षकों में परामर्श क्षमता, समावेशी शिक्षण रणनीतियाँ, कक्षा प्रबंधन कौशल और छात्र सहभागिता तकनीक की आवश्यकता होती है। क्रिस्टेंसन और थुरलो (2004) के अनुसार, स्कूलों और शैक्षिक अधिकारियों को व्यावसायिक विकास के अवसर और सहायक कार्य वातावरण प्रदान करना चाहिए जो शिक्षकों को ड्रॉपआउट-संबंधी चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए सशक्त बनाएं। शिक्षक प्रभावशीलता और छात्र प्रतिधारण में सुधार के लिए पर्याप्त बुनियादी ढाँचा, प्रबंधनीय कार्यभार, परामर्श सुविधाएँ और शैक्षिक संसाधन आवश्यक हैं।

संदर्भ

1. फिन, जे. डी. (1989). स्कूल से नाम वापस लेना। शैक्षिक अनुसंधान की समीक्षा, 59(2), 117-142।
2. रम्बरगर, आर. डब्ल्यू. (2011). स्कूल छोड़ना: छात्र हाई स्कूल क्यों छोड़ते हैं और इसके बारे में क्या किया जा सकता है। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. वेह्लेज, जी., रटर, आर., स्मिथ, जी., लेस्को, एन., और फर्नांडीज, आर. (1989). जोखिम कम करना: सहायता के समुदायों के रूप में स्कूल। फाल्मर प्रेस।
4. क्रिस्टेंसन, एस. एल., और थर्लो, एम. एल. (2004). स्कूल छोड़ने वाले: रोकथाम संबंधी विचार, हस्तक्षेप और चुनौतियाँ। मनोवैज्ञानिक विज्ञान में वर्तमान दिशाएँ, 13(1), 36-39।
5. हैटी, जे. (2009). दृश्य अधिगम: उपलब्धि से संबंधित 800 से अधिक मेटा-विश्लेषणों का संश्लेषण। रूटलेज।
6. बाल्फान्ज़, आर., और हर्ज़ोग, एल. (2005). मध्य कक्षाओं के छात्रों को स्नातक स्तर की पढ़ाई के लिए तैयार रखना। जॉन्स हॉपकिंस विश्वविद्यालय।
7. डेसी, ई. एल., और रयान, आर. एम. (2000). आत्म-निर्धारण सिद्धांत और आंतरिक प्रेरणा को बढ़ावा देना। अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट, 55(1), 68-78।
8. यूनेस्को। (2022). वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट। यूनेस्को प्रकाशन।
9. दास, के. पी. और साहा, बी. (2014). स्कूल छोड़ना: पश्चिम बंगाल में उत्तर-दक्षिण विभाजन। 12 जनवरी, 2023 को <https://www.theigc.org/sites/default/files/2015/01/Das-Saha-2014.pdf> से प्राप्त किया गया।
10. फारूकी, जेड. (2022). भारत में स्कूल छोड़ने वाले छात्र: कारण और संभावित समाधान। इंस्पिरा- जर्नल ऑफ़ मॉडर्न मैनेजमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप (जेएमएमई)। 12 (1), 166-170. 12 जनवरी, 2023 को <https://www.inspirajournals.com/issue/downloadfile/2/Volumne-Pages/zbeDNM94vnak4P0yk8jR> से प्राप्त किया गया।
11. घोष, ए., दासगुप्ता, ए., कर्मकार, आर., बंद्योपाध्याय, एल., सेम्बिया, एस., और बिस्वास, बी. (2018). स्कूल में अनुपस्थिति का आकलन: कोलकाता की एक झुग्गी बस्ती में 7-18 वर्ष की आयु के बच्चों के बीच एक समुदाय-आधारित अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मेडिकल साइंस एंड पब्लिक हेल्थ, 1. doi:10.5455/IJMSPH.2018.0718917122017
12. गिल, ए. जे., एंटेल्म-लांज़ेट, ए. एम., कैशेइरो-गोंज़ालेज़, एम. एल., और पेरेज़-नावियो, ई. (2018). स्कूल छोड़ने के कारक: एक शिक्षक और स्कूल प्रबंधक का दृष्टिकोण। एजुकेशनल स्टडीज़, 45(5), 1-14. doi: 10.1080/03055698.2018.1516632

13. लामिछाने, आर. आदि (2004). धाडिँग और सिराहा जिलों के स्कूल छोड़ने वाले बच्चों पर एक सर्वेक्षण रिपोर्ट। टीचर एजुकेटर्स सोसाइटी – नेपाल। 12 जनवरी, 2023 को https://www.jica.go.jp/project/nepal/0602442/02/pdf/Dropout_children_of_Dhading_and_Siraha,_2004_Nov.pdf से प्राप्त किया गया।